# जल तेरे रूप अनेक

मौहर सिंह

सब ग्रह घूमते निर्जन हैं, जीवन के लिए वहाँ नीर नहीं।
है बिना नीर के ग्रहों पर, जीवन बिल्कुल संभव ही नहीं।।

ब्रह्माण्ड के जितने भी ग्रह हैं, सब सूने हैं बिन पानी के।
कुदरत ने बढ़ा उपकार किया, पृथ्वी को पानी दे करके।।

है पानी की महिमा अनन्त, जग में जीवन इसके रहते।
कल्पना करें जल नहीं होता, क्या आज धरा पर हम होते।।

जीते भी जल, मरते भी जल, हर पल जीवन के संग है जल।
है नहीं विकल्प यहाँ जल का, कुदरत का ये वरदान है जल।।

जल के अतिरिक्त नहीं कोई, ऐसा पदार्थ भू पर पाया।
जो तीन रूप धारण करता, है कुदरत की कैसी माया।।

ये तीन रूप द्रव, ठोस, गैस, सबके भौतिक गुण अलग-अलग।
हैं काम सभी के अलग-अलग, हैं रूप सभी के अलग-अलग।।

जब द्रव रूप धारण करता, तो सब को जीवन देता है।
हर जीव, पशु, पौधे, मानव ये सबका मन हर लेता है।।

बिजली, फसलें पैदा होती, सब द्रव रूप के कारण हैं।
जो तीर्थ बने हैं नदियों पर, सब इसी रूप के कारण हैं।।

जब जल लेता है वाष्प रूप, ये कष्ट किसी को नहीं देता।
जब मेघा बन के बरसे तो, सब का मन हर्षित कर देता।।

है वाष्प रूप में दम कितना, ये जेम्स वॉट ने जाना था।
दुनियाँ में रेल के इंजन को, इसके कारण ही आना था।।

अब इसके ठोस रूप को लें, ये रूप बहुत है गुणकारी।
इस ठोस रूप के कारण ही, कल-कल करती नदियाँ सारी।।

यदि ठोस रूप नहीं होता तो, मिट जाती सदानीरा नदियाँ।
जो बनीं सभ्यता नदियों पर, क्या हो पाता निर्माण वहाँ।।

जहाँ ठोस रूप में जल रहता, उसको ग्लेशियर कहते हैं।
हैं सभी ग्लेशियर नदियों को, ता उम्र ये पानी देते हैं।।

हर रूप में यहाँ पर नीर रहे, तो धरा रहेगी हरी-भरी।
कोई भी रूप बिगड़ने पर, यहाँ मुश्किल होगी बहुत बड़ी।।

अनमोल खजाना पानी का, बर्बाद न हो ये प्रण कर लें।
जिस रूप से हो, जैसे भी हो, हम पानी का संचय कर लें।

*संपर्क करें:*
**मौहर सिंह**
**राष्ट्रीय जलविज्ञान संस्थान, रुड़की।**